सामाजिक विकास व पर्यावरण संरक्षण

* डॉ कविता कनौजिया

समाज प्रकृति का एक अंग है। मनुष्य समाज में रहता है समाज को दूषित न होने देना उसका कर्तव्य है यही सामाजिकता है। समाज के सभी प्राणी प्रकृति से प्रभावित होते है प्रकृति के अभाव में सामाजिक जीवन असंभव है। संतुलित पर्यावरण में सभी प्राणी अपनी स्वाभाविक स्थिति में जीवन जीते है तथा अस्वाभाविक स्थिति में उनका क्षय होता जाता है सामाजिक अभ्युदय के लिए समाज का सद्भावना पूर्ण मर्यादित व्यवहार अनिवार्य है। प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से समाज में भरपूर खुशहाली है, उत्तम परिवेश मानव मन को आनन्दित करता है, स्फूर्ति एवं उमंग का संचार भर देता है। मनुष्य को जटिल कार्यो को करने में सफलता मिलती है।

प्रकृति के अन्तर्गत भूमिजल, अग्नि, वायु, वृक्ष एवं जीव–जन्तु सभी सम्मिलित है। भूमि से भोज्य पदार्थ, जल से जीवन शक्ति, ताप, उष्मा विकास का आधार है। आकाश ध्वनि, तरंग शब्द शक्ति और संवेदनाओं का स्रोत है इनमें से कोई एक भी दूषित होता है तो सामाजिक मानव जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ईर्ष्या, छल, कपट जैसे दुष्ट भाव उत्पन्न होते है, निष्क्रियता, दबाब, तनाव तथा चिन्ता को जन्म देता है। मनुष्य के अन्दर सत्य दृढ संकल्प, त्याग जैसे विशिष्ट गुणों से प्रतिकूल परिस्थितियों पर नियत्रंण कायम रखा जा सकता है।

समाज व पर्यावरण सरंक्षण मानव व पर्यावरण के बीच सम्बन्धों को सुधारने की एक प्रक्रिया है इसमें उन मानवीय क्रिया–कलापों को नियमन, प्रबन्धन करना जिसकी वजह से पर्यावरण को क्षति पहुँचती है। अर्थात मानव जीवन शैली को प्राकृतिक व्यवस्था के अनुरूप बनाना है। किसी ने कहा है – शक्ति उन्हीं को मिलती है जो प्रकृति के साथ साधना करते है। शेक्सपीयर ने लिखा है– "The poem hangs on the berry bus, when comes

* समाजशास्त्र विभाग, किशोरी रमण गर्ल्स (पी0जी0), कालेज, मथुरा (उ0प्र0)

the poit's eye"

प्रकृति में अपार ज्ञान का भण्डार है इसके हर अंग में शिक्षा का एक–एक पूर्ण पाठ है, इसमें न धोखा है, न पक्षपात है। प्रकृति के बनते–बिगड़ते रूपों का वर्णन कवि की कविता को जन्म देती है, प्रकृति की गुणवत्ता लेखक के लेखनी को दिशा देती है इसी प्रकार संगीत की उत्पत्ति भी प्रकृति मानी जाती है। पशु–पक्षियों की बोली, नदियो की कल–कल, बादलों का गर्जना, चमकना, झरनों की झरझर, बरसात की रिम–झिम संगीत के सात स्वरों के जन्म स्रोत माने गये है।

विज्ञान व तकनीकी वृद्धि के साथ–साथ प्राकृतिक सम्पदाओं का अव्यवस्थित उपयोग हुआ है, प्राकृतिक साधनों के अनुचित उपयोग से प्रदूषण फैलाने वाले तत्वों में वृद्धि होती रही है। आज जहाँ उपलब्धियों के नये कीर्तिमान प्राप्त हो रहे है वहीं सर्वाधिक क्षति पर्यावरण को हो रही है। वर्ष 2000 में विश्व भर में गरीबी और उससे जुड़ी सामाजिक समस्याओं जैसे निरक्षरता, भूख, महिलाओं के प्रति भेद–भाव, असुरक्षित पेयजल तथा पर्यावरण विनाश को रोकने हेतु लगभग सभी देशों ने संयुक्त राष्ट्र सहस्त्राब्दी शिखर सम्मेलन में सभी देशों ने भाग लिया। इंटरगवर्नमेंट पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज के अनुसार विकसित देशों को 2020 तक अपने कॉर्बन उत्सर्जन में 25 से 40 प्रतिशत कमी करनी होगी।

धरती पर 70 प्रतिशत जल है परन्तु पीने व अन्य आवश्यक उपयोग हेतु केवल 3 प्रतिशत जल है। भारत में प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता 1947 में 6000 घन मीटर थी जो 2001 में 1829 घन मीटर रह गयी। लगातार जल स्तर नीचे जा रहा है आने वाले दिनों में समाज में पेयजल संकट की समस्या हो जायेगी। ऋग्वेद के अनुसार जिस प्रकार माता पुत्र का कल्याण करती है उसी प्रकार जल हर प्राणियों के लिये कल्याणकारी है। अथर्ववेद में उल्लेख है– हरे पेड़, पर्वत, जंगल आदि न काटे ये सब मानव कल्याणकारी है।

वर्तमान में ग्रीन टेक्नोलॉजी पर्यावरण संरक्षण में सार्थक साबित हो

रही है यह तकनीक प्रदूषण से लड़ने में सहायक है ग्रीन जॉब एक्ट ऑफ 2007 के तहत ग्रीन कालर जॉब बना है। ग्रीन प्रौद्यौगिकी में शाकाहार की भूमिका सराहनीय है। पशुपत उपनिषद में स्पष्ट है–आहार में अभक्ष्य त्याग देने से चित्त शुद्ध होता है और जीव हत्या भी नहीं होती। चरक के अनुसार–माँसाहार की तुलना में शाकाहार श्रेष्ठ है शाकाहारी होने से ग्रीन हाउस गैस का उत्सर्जन 1/6 प्रतिशत कम हो सकता है क्योंकि मांस पकाने में 6 गुना ज्यादा ऊर्जा की खपत होती है।

जन साधारण अकेले यात्रा के लिये निजी वाहन की जगह सार्वजनिक वाहन का प्रयोग करें तो 60 प्रतिशत वायु प्रदूषण कम हो सकता है। कागजों को अनावश्यक प्रयोग में न ले और रद्दी को रीसाइकलिंग के लिये भेजे। अगस्त, 1998 की अपशिष्ट निस्तारण विज्ञप्ति के अनुसार नीले रंग के पात्र में सिंरिंज, शीशा, प्लास्टिक की बोतले निःसक्रमित करने की पहल पर्यावरण संरक्षण में सार्थक साबित हो सकती है।

संदर्भ –

1. Bhargava Akhaya and Shukla S.K. - Environment Preservation and Protection
2. Sinha Rajiv K. – Environment Crisses and humans at risk
3. ऋग्वेद 1/41/4
4. ऋग्वेद 10/124/9
5. श्रीवास्तव वी0के0 एवं राव पी0 पी0 –पर्यावरण और पारिस्थितकी
6. वी0 एल0 शर्मा एवं पलक भारद्धाज – मानव पर्यावरण, मलिक एण्ड कम्पनी, संस्करण 2003